'अमृत संदेश' - १०-अक्टूबर. ९१.

'स्वर संध्या' एक अच्छी परंपरा की शुरूआत

अख्तर अली

अश्वनी वर्मा के साथ संगत कर रके थे सर्वश्री मदन चौहान, महेंद्र चौहान, जसवीर सिंह एवं कु. मृदुला आयरे।

दो अक्टूबर को महाराष्ट्र भवन के ज्ञानेश्वर सभागृह में महाराष्ट्र मंडल रायपुर द्वारा आयोजित "स्वर संध्या" में इस बार भिलाई के युवा कलाकार श्री अश्वनी वर्मा का गायन रखा गया था। वर्तमान में जब रायपुर शहर सांस्कृतिक शून्यता के भयावह सन्नाटे से गुजर रहा है, ऐसे समय महाराष्ट्र मंडल ने प्रति माह स्वर संध्या के आयोजन का निर्णय लेकर रचनात्मक आयोजन के बंद द्वार पर दस्तक दी है।

अश्वनी वर्मा के गायन ने यद्यपि इस संध्या को एक यादगार संध्या में बदला तो नहीं किन्तु फिर भी आशा लिये पहुंचे श्रोताओं को मायूस भी नहीं होने दिया। कार्यक्रम की शुरूआत उन्होंने इस गजल से की-

बदनुमा मुझसे न ऐ फसले बहारा होना।
मेरी आदत है फिजा में गुलशा होना।

गजल गायकी में कशिश तभी पैदा होती है, जब गायक की आवाज में भारीपन हो जबकि अश्वनी वर्मा के साथ दिक्कत यह है कि उनकी आवाज बारीक है किन्तु फिर भी वे इस कमजोरी को अपने गायन पर हावी नहीं होने देते। इसे उनकी विशेषता मानना चाहिए। अपनी इसी विशेषता के कारण उन्होंने अपनी अगली गजल में श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित करने में कुछ हद तक कामयाबी हासिल कर ली थी, बोल थे-

जिसे हम न कह सके तुम कहो
जिसे तुम न कह सके हम कहे

कुछ इसी कथ्य की उनकी अन्य गजल थी-

जीना है तो जीने का सहारा भी तो होगा-
हमदद मेरे किस्मत का सितारा भी तो होगा

मदन चौहान, महेंद्र चौहान एवं मृदुल आयरे को मैंने अनेक कार्यक्रमों में सुना है और हर बार इन कलाकारों का अंदाज निराला पाया है। हर बार ये पूर्व से बेहतर नजर आये हैं। इन्हें मंच पर एक साथ देखना सुखद अनुभूति का अहसास कराती है। महाराष्ट्र मंडल ने "स्वर संध्या" के माध्यम से एक अच्छे कार्यक्रम की शुरूआत की है।

नव-भारत

अश्वनी वर्मा का आज गजल गायन

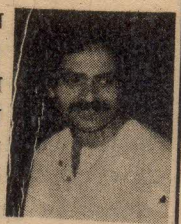

रायपुर. महाराष्ट्र मंडल रायपुर द्वारा कल २ अक्टूबर बुधवार को गजल गायक अश्वनी वर्मा (भिलाई) का गजल गायन का कार्यक्रम रखा गया है। तबले पर संगति नगर के तबलावादक श्री मदन चौहान करेंगे। समय संध्या ७ बजे। आयोजित कार्यक्रम पूर्णत निःशुल्क है।

उल्लेखनीय है कि नगर की सांगीतिक गतिविधियों की शून्यता को दृष्टिगत रख महाराष्ट्र मंडल ने 'स्वर संध्या' नामक एक संगीत विंग की स्थापना पिछले वर्ष की है जिसके अन्तर्गत अब तक श्री दिगम्बर केलकर (रायपुर), कु. संध्या राहटगांवकर (महासमुन्द), मधुकर पाठक (जबलपुर) के कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके है।